an>

Title: Need to promote Ayurvedic medicines.

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक (हरिद्वार): महोदया, आयुर्वेद और योग विश्व के जनमानस के स्वास्थ की रक्षा के लिए दुनिया में शीर्ष प्राथमिकता को स्वतः साबित कर चुका है। मैं प्रधान मंत्री जी को बधाई देना चाहता हूँ, जिनकी अगुवाई में दुनिया के 171 से भी अधिक देशों ने यह साबित कर दिया है कि दुनिया के जनमानस के स्वास्थ की रक्षा की दिशा में योग और आयुर्वेद के विस्तार की नितांत आवश्यकता है। मेरा आपके माध्यम से सरकार से निवेदन है कि आयुÂष शिक्षा पर विशेÂष जोर दिया जाए। आयुर्वेद के जो मूल ग्रंथ हैं, वे संस्कृत में हैं, इसलिए बी.ए.एम.एस. और उससे संबंधित जितने भी कोर्स हैं, उनके लिए कम से कम इंटर तक संस्कृत की शिक्षा को अनिवार्य करना सुनिश्चित किया जाए। साथ ही योग को भी पाठ्यक्रमों में सम्मिलित किया जाए। 4 लाख 50 हज़ार करोड़ रुपये से भी अधिक औÂषधियों का मार्केट वाला यह इतना बड़ा क्षेत्र है, आज आयुर्वेद की दवाइयां परचून की दुकानों पर मिल रही हैं, जो कि शर्मनाक बात है। इसलिए इसमें गिरावट आ रही है।

मेरा आपसे अनुरोध है कि जो डिप्लोमा फार्मासिस्ट हैं, उनको बाकायदा लाइसेंस दिया जाये और दवाइयों की बिक्री जो परचून की दुकानों पर हो रही है, इस पर प्रतिबन्ध लगाया जाये। मेरा विशेÂष अनुरोध यह है कि उत्तराखंड आयुर्वेद प्रदेश है, इसलिए आयुर्वेद प्रदेश में आयुÂष की शिक्षा और शोध का एक अंतर्राष्ट्रीय संस्थान स्थापित किया जाये, ताकि वहाँ से हिमालय, गंगा, आयषोवेदः, आयुर्वेद की ललक पूरी दुनिया तक जा सके। मैं यह आपके माध्यम से सरकार से निवेदन करना चाहता हूँ। धन्यवाद।

माननीय अध्यक्ष :

श्री रोड़मल नागर,

श्री भगवंत खुबा,

श्री प्रहलाद जोशी,

श्री सुरेश सी. अंगड़ी,

डॉ. बंशीलाल महतो,

श्री लखन लाल साहू और

श्री भैरों प्रसाद मिश्र को डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है।